SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. SESSION – ....

C.1 childhood and growing up

SUBJECT - ....

TOPIC NAME – ....

DATE - ....

Scanned with CamScanner

* समाजीकरण की अवधारणा :-

समाजीकरण :- मनोविज्ञान के अनुसार व्यक्ति जब जन्म लेता है तो वह न तो सामाजिक प्राणी होता है और न ही असमाजिक प्राणी। परन्तु यह आवश्यक होता है कि वह जन्म से ही समाज का सदस्य और अभिन्न अंग बन जाता है जैसे-जैसे बालक का विकास होता है वैसे-वैसे उसके सामाजिक विकास की प्रक्रिया भी प्रारंभ हो जाती है यह प्रक्रिया स्थिर न होकर जीवनपर्यंत चलती रहती है।

इसप्रकार व्यक्ति सामाजिक आदर्शों, परम्पराओं तथा रूढ़ियों के अनुसार चलते हुए सामाजिक बन जाता है तब वह प्रक्रिया समाजीकरण कहलाती है।

* समाजीकरण का परिभाषा :-

* **हैरी एम० जॉनसन के अनुसार :-** "समाजीकरण सीखने की वह प्रक्रिया है जो सीखने वाले को सामाजिक भूमिकाओं का निर्वाह करने योग्य बनाती है।"

* **वाटसन के अनुसार :-** "समाजीकरण एक सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है।"

* **ड्रेवर के अनुसार :-** "समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने सामाजिक वातावरण से समायोजन करता है और सामाजिक मान्यता प्राप्त करके वह समाज का कुशल सदस्य बनता है।"

* समाजीकरण की विशेषताएं :-

Scanned with CamScanner

→ (1) सामाजिक परिपक्वता (Social Maturity)

→ (2) सामाजिक अनुरूपता (Social conformity)

→ (3) सामाजिक समायोजन (Social Adjustment)

→ (4) सामाजिक गतिविधियों में भाग लेना (Participation in social Activities)

→ (5) सामाजिक अंतःक्रियायें (Social Interaction)

(1) <u>सामाजिक परिपक्वता</u> :- जब कोई व्यक्ति अपनी इच्छा से सामाजिक मान्यताओं, रीति-रिवाजों, परम्पराओं और नियमों का पालन करता है तथा सामाजिक कार्यक्रमों में सम्मिलित होता है तब वह सामाजिक परिपक्वता के अंतर्गत आता है।

(2) <u>सामाजिक अनुरूपता</u> :- जो व्यक्ति सामाजिक मूल्यों, सामाजिक आदर्शों तथा सामाजिक परम्पराओं के अनुसार व्यवहार करना तथा आसानी से समाज के साथ सामंजस्य स्थापित करता है वही व्यक्ति सुखमय एवं सम्मानपूर्ण जीवन व्यतीत करता है यही सामाजिक अनुरूपता कहलाती है।

(3) <u>सामाजिक समायोजन</u> :- कोई भी व्यक्ति समाज में यथोचित जीवन-यापन के लिए दूसरे के साथ तालमेल सहयोग, सहानुभूति, सहकारिता, करुणा, स्नेह आदि के साथ अपना सामाजिक समायोजन करता है।

(4) <u>सामाजिक गतिविधियों में भाग लेना</u> :- व्यक्ति अपनी योग्यता, क्षमता तथा आयु के आधार पर सामाजिक कार्यों या गतिविधियों में भाग लेता है जिससे समाजीकरण की प्रक्रिया में तेजी आती है

Scanned with CamScanner

(5) सामाजिक अंतःक्रियाऐं :- जब कई व्यक्ति परस्पर मिलते हैं, तो उनमें कई प्रकार की क्रियाऐं होती हैं जिस कारण वे एक-दूसरे पर अपना प्रभाव डालते हैं यही समस्त क्रियाऐं अंतःक्रियाऐं कहलाती हैं। व्यक्तियों के बीच अंतःक्रियाऐं यह प्रदर्शित करता है कि समाजीकरण तिव्र गति से हो रहा है।

* समाजीकरण की अवधारणा :- जन्म के समय बच्चा असंतुलित गतियों का एक समूह होता है जो जैविक जीवन-शक्ति से संघर्ष करते हुए, प्रौढ़ों की सहायता से जीवित रहता है। बच्चे जब जन्म लेता है तब वह एक जीवित पुतले के समान होता है उस समय न तो उसमें कोई सामाजिक गुण होता है और न ही कोई समाज-विरोधि गुण। उस समय वह एक अबोध जीवित प्राणि होता है।

इसतरह जैसे-2 बालक की आयु बढ़ती है वह समाज एवं संस्कृति के बीच पलते हुए धीरे-2 एक सामाजिक प्राणी में बदल जाता है। समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से ही व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण होता है। अतः समाजीकरण व्यक्तियों में जन-रीतियों, रूढ़ियों, कानूनों, मान्यताओं और संस्कृतियों को सीखाकर उन्हें समाज का क्रियाशील सदस्य बनने में सहायता देता है। जिसके कारण व्यक्ति अपने आपको समाज-पड़ोस और वातावरण के अनुकूल बनाना सीखते है।

Scanned with CamScanner

* समाजीकरण की संस्थायें एवं उनकी भूमिका :-

- (1) परिवार
- (2) समुदाय
- (3) विद्यालय
- (4) मित्रमंडली
- (5) शिक्षक
- (6) मीडिया या जनसंचार
- (7) बाजार
- (8) अनौपचारिक एवं सामाजिक संस्थायें (संस्कृति, वर्ग, जाति एवं जेण्डर)

(1) बालक के समाजीकरण में परिवार की भूमिका :-

- (i) शारीरिक विकास
- (ii) मानसिक विकास
- (iii) संवेगात्मक विकास
- (iv) भाषायी विकास
- (v) सामाजिक विकास
- (vi) सांस्कृतिक विकास
- (vii) धार्मिक एवं आध्यात्मिक विकास
- (viii) सृजनात्मक विकास
- (ix) मूल्यों, आदर्शों, मान्यताओं, परम्पराओं एवं रीति-रिवाजों का विकास
- (x) व्यवसायिक विकास ।

Scanned with CamScanner

(2) बालक के समाजीकरण में समुदाय की भूमिका :-

- (i) शारीरिक विकास पर प्रभाव
- (ii) सामाजिक वातावरण का विकास
- (iii) मानसिक प्रवृत्तियों का विकास
- (iv) राजनैतिक आवश्यकताएँ
- (v) आर्थिक प्रभाव
- (vi) नैतिक एवं अध्यात्मिक भावना
- (vii) सांस्कृतिक प्रभाव
- (viii) भावनात्मकता की भावना का विकास।

(3) बालक के समाजीकरण में विद्यालय की भूमिका :-

- (i) बालक का मानसिक एवं बौद्धिक विकास
- (ii) शारीरिक तथा गत्यात्मक विकास
- (iii) सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक विकास
- (iv) अध्यात्मिक तथा नैतिक विकास
- (v) भावात्मक तथा चारित्रिक विकास
- (vi) व्यावसायिक विकास
- (vii) राष्ट्रीयता की भावना का विकास
- (viii) नेतृत्व की भावना
- (ix) लघु समाज के रूप में भूमिका निर्वहन
- (x) अंतर्राष्ट्रीयता की भावना का विकास
- (xi) प्रजातांत्रिक मूल्यों का विकास
- (xii) शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण
- (xiii) सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना
- (xiv) शिक्षकों में कर्तव्यनिष्ठा की भावना जाग्रत करना।

Scanned with CamScanner

(4)

* बालक के समाजीकरण में मित्रमंडली की भूमिका :-

(i) बालक का विकास समाज में होता है जहाँ वह अन्य बालकों के संपर्क में आकर अपने अंदर समाजीकरण की भावना विकसित करता है।

(ii) बालक अपना रहन-सहन इत्यादि (भाषा) को समाजीकरण की प्रक्रिया में ही अपने मित्रों से सीखता है।

(iii) विद्यालयों में बालक अपने मित्र-समूहों में ही रहता है साथ में पढ़ता है और समाजीकरण की प्रक्रिया में भाग लेते है।

(iv) बालको का विकास उनके मित्रमंडली में संगति के अनुरूप होता है।

(v) बालक अपने मित्र-मंडली के साथ खेलना-कूदना एवं अन्य गतिविधियाँ सीखता है।

इसप्रकार उपरोक्त तथ्यों के आधार पर बालक के समाजीकरण पर उसके मित्र-मंडली का गहरा प्रभाव देखा जाता है। अतः बालक का शारीरिक, मानसिक बौद्धिक क्षमता एवं अन्य गतिविधियों पर मित्रमंडली का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जाता है।

(5) बालक के समाजीकरण में शिक्षकों की भूमिका :-

- (i) शिक्षकों का प्रभावशाली व्यक्तित्व
- (ii) लोकतांत्रिक एवं सामाजिक सामंजस्य की भावना
- (iii) नवीन शिक्षण विधियों का प्रयोग
- (iv) पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता
- (v) नैतिक तथा चरित्रवान बनाना
- (vi) रचनात्मकता एवं सृजनात्मकता पर बल देना।
- (vii) बालक के संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास पर बल
- (viii) सामाजिक मूल्यों को जाग्रत करना।

Scanned with CamScanner

(6) बालक का समाजीकरण एवं जनसंचार की भूमिका -:

- (i) बालको को मनोरंजनात्मक कार्यक्रमों के साथ-साथ महत्वपूर्ण विषयों पर समाजीकरण हेतु जागरुक करना।
- (ii) समाज में सभी वर्गों हेतु समानता का शिक्षा देना
- (iii) सामाजिक समस्याओं की ओर सरकार का ध्यान दिलाना
- (iv) पाठ्यवस्तुओं के प्रकाशन हेतु
- (v) समाज तथा व्यक्ति के मध्य सामंजस्य स्थापित करना
- (vi) व्यक्तियों को अंतर्राष्ट्रीय मंच से जोड़ने हेतु
- (vii) सामाजिक रुढ़िवद्धता और मान्यताओं को समाप्त करने हेतु
- (viii) कम समय में अधिक व्यक्तियों के पास सूचनाएं पहुंचाने हेतु।

(7) बालक के समाजीकरण में संस्कृति, वर्ग, जाति एवं जेण्डर की भूमिका -:

(i) प्रत्येक समाजों की अपनी-अपनी संस्कृति होती है जिसमें - रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा, धर्म, कला, दर्शन आचार-विचार, रीति-रिवाज, मूल्य-मानक, भाषा, उपकरण राजनैतिकता और आर्थिक व्यवस्था का आदान-प्रदान करना।

(ii) सामाजिक व्यवस्था कई वर्गों में बंट हुआ है अतः उसे एक दल में बांधना एवं भेदभाव दूर करना।

(iii) जातिय भेद-भाव को मिटाना एवं असमानता को दूर करना।

(iv) बालको को पारिवारिक परिवेश से ही अपनी जाति के साथ रहने-उठने-बैठने की शिक्षा मिलती है जो उसपर गहरा प्रभाव डालती है।

--- 0 ---

Scanned with CamScanner